हरियाणा में धर्मशालाओं की परंपरा

आलेख – रणबीर सिंह

हरियाणा में धर्मशालाओं के निर्माण और व्यवस्था की परंपरा संभवतः मौर्यकाल से शुरू हुई होगी क्योंकि पथिकों, यात्रियों और व्यापारियों द्वारा गांव या नगर में प्रवेश करने के बाद उनके विश्राम और भोजन की व्यवस्था करने की आवश्यकता होती थी। मौर्य और गुप्तकालीन इतिहास एवं धर्म से संबंधित दस्तावेजों के अध्ययन से नगर और गांव में सरायों और धर्मशालाओं के होने की बात पता चलती है। सराय और धर्मशाला में कुछ मौलिक भेद है। सराय में कुछ शुल्क लेकर विश्राम के लिये स्थान और भोजन की व्यवस्था होती है जबकि धर्मशाला में दोनों ही निःशुल्क प्रदान किये जाते हैं। हरियाणा में बहुत प्राचीन समय की धर्मशालाओं के अवशेष उपलब्ध नहीं हैं लेकिन मुगलकाल में बनी हुई अनेक सरायों में से कुछ का अस्तित्व आज भी बना हुआ है।

धर्मशालाओं में सेवा का तत्व प्रमुख होता है। यहां न केवल यात्रियों एवं बाहर के आगन्तुकों के लिये रहने और खाने की व्यवस्था मुफ्त होती है बल्कि यह प्रावधान भी होता है यात्री अपना भोजन स्वयं तैयार कर सकें। इसके लिये उन्हें केवल ईंधन और पानी के लिये धर्मशाला द्वारा की गई व्यवस्था पर निर्भर रहना पड़ता है। धर्मशाला में इसके लिये संचालकों की ओर से ईंधन पानी के अलावा अन्न प्रदान करने की भी व्यवस्था कुछ जगह होती है। प्रत्येक धर्मशाला में एक कुइयां अथवा बड़ा कुआं जरूर बनाया जाता था। आमतौर पर धर्मशाला में चारों ओर कक्ष होते थे और बीच में बड़ा आंगन। कक्ष, बड़े और छोटे होते थे ताकि आगन्तुक अपने स्तर के अनुसार रह सकें। उन्हें अपनी यात्रा अथवा आने का उद्देश्य, अपने संपर्क एवं स्थायी पते के बारे में धर्मशाला के संचालक को जानकारी देनी जरूरी होती थी। कहीं–कहीं इस बारे रिकार्ड भी रखा जाता था ताकि नगराधिकारी को भी आगन्तुकों के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सके। धर्मशालाओं के निर्माण और व्यवस्था में मूल तत्व धर्म अर्थात सेवा का ही रहा है और इन्हें हमेशा से ही राजनीति, प्रशासनिक हस्तक्षेप और किसी प्रकार के जातीय अथवा धार्मिक भेद–भाव से दूर रखा जाता था। हां, मुस्लिम काल के देश में आने के बाद यह जरूर हुआ कि मुसलमानों के लिये धर्मशाला तो नहीं लेकिन सराय का प्रचलन हुआ।

हरियाणा प्रदेश में धर्मशालाएं बनाने का काम सार्वजनिक रूप से विशिष्ट समुदायों ने ही किया। बहुधा, धर्मशालाएं नगर या गांव की परिधि पर बनायी जाती थीं ताकि आगन्तुकों से अधिक मेल–मिलाप न हो और ग्रामजनों या नगरजनों की सामान्य दिनचर्या में व्यवधान उत्पन्न न हो। धर्मशालाएं एक ग्राम से दूसरे ग्राम और नगर से दूसरे नगर के बीच आम रास्तों पर भी उचित स्थान देख बना दी जाती थीं। ऐसी धर्मशालाएं संपन्न व्यक्तियों द्वारा बनायी जाती थीं। पुराने वक्तों में राजा–महाराजाओं द्वारा भी धर्मशालाएं बनवायी जाती थीं। इनका उद्देश्य मात्र आवासीय और पानी की सुविधा प्रदान करना ही था ताकि गर्मी, सर्दी और बरसात के समय यात्री सुऱक्षित रह सकें। मोटर वाहनों और पक्के सड़क मार्गों के विकास से पहले एक से दूसरे स्थान पर जाने के लिये आमतौर पर सवारी वाले पशुओं के साथ लोग पैदल ही दूरियां तय किया करते थे। हरियाणा में एक से दूसरे गांव और नगर के बीच ऐसे जो पथ थे उन पर आज भी हम अनेक धर्मशालाएं देख सकते हैं। ऐसी धर्मशालाएं दूरी देख कर नहीं बल्कि उचित स्थान देख कर बनायी जाती थीं। पथिक जब थक जाते तो कहते कि अमुक धर्मशाला बस थोड़ी ही दूर है, वहां बैठ कर विश्राम और भोजन ग्रहण करेंगे। हरियाणा में खादर के इलाके में बहुत सी धर्मशालाएं ऐसी थीं जहां कुइयां पर छोटा

सा रहट लगा दिया जाता था जिसे एक व्यक्ति ही हाथ से धक्का देकर पानी निकाल लेता था। अन्यथा कुइयों और कुओं पर सांकल वाली लंबी बेल के साथ एक डोल उपलब्ध होता था जिसकी सहायता से पानी निकाला जाता था।

बाहर पथों की धर्मशालाओं के अलावा गांव और नगर के भीतर भी धर्मशालाएं होती थीं। लेकिन इनका इस्तेमाल केवल नगरवासी या ग्रामवासी अपने लिये करते थे। हरियाणा में गांवों में रहने वाले विभिन्न समुदाय के लोग तो अपने इस्तेमाल के लिये चौपालें बना लेते लेकिन बणिया लोग केवल धर्मशाला बनाते थे। इनका इस्तेमाल विवाह के समय बारातियों के विश्राम के लिये होता था।

उपरोक्त के अलावा प्रारंभिक काल से ही मंदिरों से संलग्न तीर्थ यात्री–गृह अथवा धर्मशालाएं रही हैं। हरियाणा में पुराने समय में कुरुक्षेत्र और गंगा स्नान के लिये हरिद्वार या उत्तरांचल के प्राचीन तीर्थों की यात्रा पर जाने वालों के लिये मंदिरों में धर्मशालाएं की व्यवस्था की गई थी। संयुक्त पंजाब के समय ऐसी एक विशाल धर्मशाला जगाधरी के देवी मंदिर प्रांगण से संलग्न करके बनाई गई थी जो आज भी चालू है। कुरुक्षेत्र में ही तीर्थयात्रियों के लिये निःशुल्क विश्राम एवं भोजन की व्यवस्था करने के लिये हरियाणा के विभिन्न समुदायों ने अनेक धर्मशालाओं का निर्माण विगत में किया था। कुरुक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर और 'दर्रे' के बीच विगत में करीब 100 के करीब धर्मशालाओं का निर्माण हुआ जिनमें से उदाहरण के तौर पर जाट, रोड़, राजपूत क्षत्रिय, सारस्वत ब्राह्मण, सैनी और बिरागी बिरादरियों द्वारा विशाल धर्मशालाओं का निर्माण किया गया। हरियाणा में बड़े गांवों में जहां बणियों की पांच घर भी हुए और उनका चोखा कारोबार रहा, एक अदद धर्मशाला का निर्माण किया गया। हरियाणा के जिस नगर में बणियों की अच्छी–खासी आबादी रही और आज भी है, वहां धर्मशाला के लिये सुंदर और कलात्मक भवन बनाये गये। इनमें भिवानी नगर में सेठ किरोड़ीमल द्वारा ई. सन् 1948 के आसपास बनायी गई धर्मशाला का भवन बेहद दर्शनीय कहा जा सकता है जिसमें वास्तुशिल्प के अनुसार कई तरह के कलात्मक आयाम जोड़े गये थे। यह धर्मशाला आज भी बरकरार है। हिंदुओं के अलावा हरियाणा में रहने वाले सिख समुदाय ने यात्रियों के विश्राम और भोजन की व्यवस्था गुरुद्वारों में की जहां लंगर लगा कर भोजन की निःशुल्क व्यवस्था होती है।

दक्षिण हरियाणा में एक और बात देखने में आयी। वहां पुराने कारवां पथों पर पीने के पानी की व्यवस्था करने के लिये साधन संपन्न और धर्मादा व्यक्तियों ने कुंडों का निर्माण किया जिनमें वर्षा जल का संग्रह किया जाता था। दक्षिण–पश्चिमी हरियाणा के रेतीले और कंटीली झाड़ियों व वृक्षों से सराबोर इलाके में भू–जल या तो खारा अथवा कड़वा होता है। ऐसे में यहां के लोगों ने कुंडों जैसी युक्ति को समयसिद्ध किया और पीने के लिये मीठे जल की व्यवस्था की। ये कुंड ईंटों अथावा पत्थरों को चूने में लगाकर तैयार किये जाते थे जिसके ऊपर टोपी नुमा छतरी बनायी जाती ताकि न तो सूरज की गर्मी से पानी भाप बन कर उड़े और न ही उसमें कूड़ा–कचरा उड़ कर गिरे। एक बात और यह थी कि कुंडों की टोपी अथवा छत में एक 'खिड़की' लगायी जाती थी ताकि जरूरत होने पर इसे खोल कर पानी निकाला जा सके। खैर, इस बारे विस्तार से एनसाइक्लोपीडिया के किसी और खंड में विवरण उपलब्ध है। चूंकि इन कुंडों की कारवां के लिये बड़ी उपयोगिता होती थी, इसलिये इन्हें बनाने वालों ने यह ध्यान रखा कि यहां विश्राम और भोजन की व्यवस्था भी हो जाये तो ठीक रहेगा। इसके लिये बनाने वालों ने कुंड परिसरों का निर्माण इस प्रकार किया कि उनसे संलग्न कक्ष बनाये जायें जहां ईंधन और अन्न का भी भंडार किया जाये। हरियाणा में भिवानी नगर लोहारू और आगे शेखावाटी की ओर जाने वाले कारवांओं के लिये उन दिनों नगर सेठों ने देवसर से आगे मरुभूमि के टिब्बों पर 'चौकी वाला कुंड', लोहानी के निकट 'कांगड़ वाला कुंड', कैरूं से

बहल वाले रास्ते से थोड़ा हटकर खारियावास गांव में सेठ हरनारायण द्वारा बनवाया गये कुंड और धर्मशाला के अतिरिक्त गांव देवसर में मौजूद 'देवी वाला कुंड' और धर्मशाला तथा गांव पोहकरवास के कुंड और धर्मशाला काफी महत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं। देवसर गांव में ही गांव में प्रवेश करते ही एक विशाल धर्मशाला का निर्माण तीर्थयात्रियों के लिये किया गया था जिसमें एक विशाल 'टांका', अर्थात वर्षा जल संचयित करने की युक्ति, आज भी चालू है।

हरियाणा में जितने भी तीर्थस्थान हैं वहीं पर विगत में धर्मशालाओं का निर्माण हुआ। उदाहरणार्थ पेहवा, पांडु–पिंडारा और नारनौल के निकट ढोसी पहाड़ पर च्यवन तीर्थ पर आने वाले यात्रियों के लिये पहाड़ की तलहटी में बसे हुए गांव कुलताजपुर में धर्मशालाओं का निर्माण हुआ था। हरियाणा में धर्मशाला के रख–रखाव की जिम्मेवारी उसी की होती है जिसने उनका निर्माण किया हो। देखने में आया है कि जिन कच्चे या कारवां पथों के निकट से सड़क मार्ग का निर्माण हो गया अथवा जिन पुराने पथों को लोगों ने छोड़ दिया या उनकी जरूरत नहीं रही, उन पथों पर निर्मित धर्मशालाओं की हालत कुछ समय बाद खस्ता हो गई। बल्कि बहुत सी तो खंडहर में तबदील हो चुकी हैं। आने–जाने के लिये तीव्र गति से साधन हो जाने के बाद आज ग्राम–तीर्थों की धर्मशालाओं में भी कोई विश्राम नहीं करना चाहता। ऐसे में कुछ धर्मशालाएं रख–रखाव के अभाव में खंडहरों में तबदील हो रही हैं। इस धरोहर की देखभाल के लिये लोगों को ही आगे आना होगा।